P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-IV, May-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

कानपुर नगर के बी.एड. प्रशिक्षण में अध्ययनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन–अभ्यास में पर्यवेक्षक के प्रति अभिवृत्ति''–एक अध्ययन

मीना पुरवार
विभागाध्यक्ष,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
डी0जी0पी0जी0 कालेज,
कानपुर

सारांश

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है कोई भी राष्ट्र तब तक उन्नति नहीं कर सकता है जब तक उस राष्ट्र के प्रत्येक मानव को विकास के सर्वोत्तम अवसर न मिले। आज के इस वैश्वीकरण में शिक्षा का स्वरूप काफी परिवर्तित हो चुका है शिक्षा की सम्पूर्ण बागडोर शिक्षक के हाथो में होती है इसलिये शिक्षको को जागरूक करने के लिये शिक्षक शिक्षा की महती आवश्यकता है शिक्षा के गुणात्मक स्तर को बढ़ाने के लिये अच्छा अध्यापन अच्छे अध्यापक पर निर्भर करता है आज सूचना और प्रौद्योगिकी के युग में परम्परागत तरीके से कक्षा शिक्षण–अभ्यास में नई विधियों एवं नवाचारों की आवश्यकता है यदि कक्षा शिक्षण अभ्यास मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की कसौटी पर खरा उतारना है तो शिक्षको को प्रशिक्षण के माध्यम से सैद्धान्तिक और व्यवहारिक ज्ञान कराया जा सकता है यूँ तो भारत वर्ष में शिक्षण प्रशिक्षण की शुरूआत वैदिक काल, बौद्धकाल, मध्यकाल, ईसाई मिशनरी काल, ब्रिटिश शासन काल तथा विभिन्नआयोगो के सुझाव के आधार पर की गई सन् 1973 में भारत सरकार ने U.G.C. और N.C.E.R.T.के सहयोग से N.C.T.E. की स्थापना की और N.C.T.E. ने बी. एड. पाठ्यक्रम में सुधार हेतु काफी परिवर्तन कर महाविद्यालयों में लागू कर दिया। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग अध्यापन–अभ्यास है अध्यापन–अभ्यास का पर्यवेक्षण एवं निर्देशन करने वाले पर्यवेक्षकों में बहुत सारे गुणों का होना आवश्यक है। तभी अध्यापन–अभ्यास के पर्यवेक्षण कार्य का मूल्यांकन अच्छी तरह से हो सकेगा।

मुख्य शब्दः अध्यापन–अभ्यास, पर्यवेक्षक, अभिवृत्ति, अध्ययन।

प्रस्तावना

किसी भी प्रगतिशील राष्ट्र द्वारा अपने विकास हेतु अपनाये गये विविध साधनों में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा की प्रक्रिया में शिक्षक ही वह धुरी है जिसके चारों ओर सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली चक्कर लगाती है। शिक्षक ही विद्यालय तथा शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति हैं। यह सत्य है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम सहगामी क्रियायें, निर्देशन कार्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें आदि सभी वस्तुयें शैक्षिक कार्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं, परन्तु जब तक उनमें कुशल प्रशिक्षित शिक्षक द्वारा जीवनशक्ति नहीं दी जायेगी तब तक वे निरर्थक रहेगी। प्रायः यह विचार व्यक्त किया जाता है कि शिक्षक जन्मजात होते है और इन्हें प्रशिक्षण संस्थाओं द्वारा उत्पन्न नहीं किया जा सकता। परन्तु कोई भी प्रगतिशील राष्ट्र जो तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तनों तथा उनमें विकास की कामना करता है, थोड़े से जन्मजात अध्यापकों की सेवा से संतुष्ट नहीं हो सकता। अपनी विशाल जनसंख्या को अपने उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों से अवगत कराने के लिये उसे बहुत बड़ी संख्या में योग्य एवं निपुण अध्यापकों को तैयार करने की आवश्यकता होती है। इसी उद्देश्य की प्राप्ति हेतु शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम की स्थापना की गयी।

शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत शिक्षक ही एकमात्र वह व्यक्ति होता है जो बालकों के कौशल को पहचान कर उनकी छिपी हुई योग्यताओं को समाज के सामने लाने में सफलतम प्रयत्न करता है इसलिये शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक भावी शिक्षक के व्यक्तित्व के विकास का हर संभव प्रयास करते हैं। अतः शिक्षण व्यक्ति के विकास में तो सहायक है परन्तु प्रभावी शिक्षण इससे भी बढ़कर है। कोठरी आयोग का भी मानना था कि शिक्षक को शिक्षा के विकास

की कुंजी माननी चाहिये। एक शिक्षक की भूमिका निर्धारित कोर्स समाप्त करने से लेकर व्यक्तित्व निर्माण तक ही सीमित नहीं, बल्कि समाज, राष्ट्र एवं जनतंत्र हेतु उपयोगी नागरिकों का निर्माण भी है। निर्माण की इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भूमिका अकथनीय होती है।

डॉ0 राधाकृष्णन् के विचार के अनुसार

''समाज में शिक्षक का स्थान अत्यधिक महत्वपूर्ण होता है। वह पीढ़ी दर पीढ़ी बौद्धिक परम्पराओं तथा शैक्षिक कौशलों के हस्तान्तरण के उपक्रम के रूप में सभ्यता के प्रकाश को प्रकाशित करने में सहायक होता है।''

इस सदी में शिक्षक अपनी भूमिका का निर्वाह ठीक प्रकार से कर सके, इसलिये उसके ज्ञान का आधार सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का ज्ञान, उभरती हुयी अपेक्षायें, संवैधानिक लक्ष्य, मूल्य एवं नैतिकता तथा भविष्य में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर शिक्षक–प्रशिक्षण का स्वरूप, शैक्षिक व्यवस्था तथा पर्यवेक्षण होना आवयश्यक है जिससे समर्थ एवं प्रबुद्ध वैज्ञानिक चिन्तन वाले शिक्षक तैयार हों। इसलिये शिक्षक–प्रशिक्षण में कुछ नवाचार किये गये। कक्षाओं में अध्यापन–अभ्यास के स्तर को सुधारने की आवश्यकता हेतु एवं प्रभावशील कक्षा–अध्यापन हेतु प्रभावशाली पर्यवेक्षण की आवश्यकता है।

अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिये समय–समय पर प्रयास किये गये जिसके अन्तर्गत भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा मई 1973 में यू.जी.सी. तथा एन.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (N.C.T.E.) की स्थापना की गई जिसमें 1993 में इस परिषद को संवैधानिक स्तर भी प्रदान कर दिया गया था। N.C.T.E. ने अध्यापक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिये अनेक अवसर प्रदान किये। इस तरह से N.C.T.E. द्वारा सैद्धान्तिक मानकों को तो लगभग सभी विश्वविद्यालय लागू कर रहे है लेकिन अध्यापन–अभ्यास में पर्यवेक्षण सम्बन्धी सुधार में वांछित सुधार नहीं हो पा रहा है।

शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम का एक महत्वपूर्ण अंग अध्यापन–अभ्यास है जिसके द्वारा छात्राध्यापकों को व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जा रहा है। अध्यापन–अभ्यास को सफल एवं प्रभावशाली बनाने के लिये प्रशिक्षण विभाग के अध्यापकों की देखरेख में प्रशिक्षुओं का पर्यवेक्षण किया जाता है।

अध्यापन–अभ्यास के वांछित लाभ के लिये पर्यवेक्षक द्वारा उसका पर्यवेक्षण एवं निर्देशन संतोषजनक होना आवश्यक है। किन्तु अध्यापन–अभ्यास का पर्यवेक्षण एवं निर्देशन करने वाले पर्यवेक्षकों में किन–किन वैयक्तिक एवं व्यवसायिक गुणों का समावेश होना चाहिये। उनके साथ प्रशिक्षार्थी से किस प्रकार का व्यवहार किया जाना चाहिये। अध्यापन–अभ्यास के पर्यवेक्षण कार्य का मूल्यांकन उनको विकसित करने के सुझाव तथा तरीकों को ध्यान में रखते हुये प्रस्तुत शोध की आवश्यकता महसूस की।

समस्या कथन

''कानपुर नगर के बी.एड. प्रशिक्षण में अध्यनरत् छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अध्यापन–अभ्यास में पर्यवेक्षक के प्रति अभिवृत्ति''–एक अध्ययन

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

बी.एड. प्रशिक्षण

माध्यमिक स्तर के अध्यापक बनने के लिये जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह बी.एड. कहलाता है।

अध्यापन–अभ्यास

बी.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम के अन्तर्गत पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग अध्यापन–अभ्यास है जिसके द्वारा छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान किया जाता है।

पर्यवेक्षक

उत्तम पर्यवेक्षक का लक्षण है कि वह शिक्षकों की शक्ति को उचित रूप से रचनात्मक कार्यो में लगा सकें और उसमें व्यक्तिगत तथा सामान्य समस्याओं के निराकरण की क्षमता बढ़ा सकें।

अभिवृत्ति

अभिवृत्ति एक सामाजिक प्रत्यय एवं मानसिक पहलू है इसके माध्यम से व्यक्ति विशेष का अध्ययन संभव होता है।

समस्या के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य है

1. छात्राध्यापकों की पर्यवेक्षकों के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
2. छात्राध्यापिकाओं की पर्यवेक्षकों के प्रति अभिवृत्ति ज्ञात करना।
3. छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की पर्यवेक्षकों के प्रति अभिवृत्ति की तुलना करना।

परिकल्पना

अध्ययन के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधकर्त्री ने वर्तमान अध्ययन के सन्दर्भ में जिन प्रमुख परिकल्पनाओं का परीक्षण किया, वे निम्नलिखित है

1. पर्यवेक्षक के नियमितता के प्रति छात्र अध्यापक और छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
2. पर्यवेक्षक के पाठ अवलोकन के प्रति छात्र अध्यापक व छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
3. पर्यवेक्षक की योग्यता के प्रति छात्र अध्यापक व छात्र अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
4. पर्यवेक्षक के छात्र अध्यापको के कक्षा के मौखिक व्यवहार के अवलोकन के प्रति छात्र अध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है।
5. पर्यवेक्षण की उपयोगिता के प्रति छात्र अध्यापकों और छात्रा अध्यापिकाओं की अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन

वर्तमान शोध के संदर्भ में कुछ शिक्षक–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं को चयन कर उन्हें न्यादर्श मानकर अध्ययन किया गया।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-IV, ISSUE-IV, May-2016
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में 200 छात्राध्यापक एवं 200 छात्राध्यापिकायें को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित उपकरण का प्रयोग किया गया।

छात्राध्यापकों एवं छात्राध्यापिकाओं की वर्तमान अध्यापन–अभ्यास के पर्यवेक्षण प्रणाली में पर्यवेक्षक के प्रति अभिवृत्ति जानने के लिये लिकर्ट की योग निर्धारण विधि पर आधारित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यकीय विश्लेषण

वर्तमान शोध में शोधकर्त्री ने प्रदत्तों के विश्लेषण के लिये मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण

अध्यापन अभ्यास प्रणाली व पर्यवेक्षक के प्रति छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति,''अभिवृत्ति मापनी'' के द्वारा ज्ञात की गई।

तालिका 1

पर्यवेक्षक की नियमितता के प्रति छात्र अध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

	मध्यमान		क्र.अनुपात	कथन
छात्र अध्यापक	12.12	1.58	0.96	असार्थक
छात्र अध्यापिका	12.27	1.55		

तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि पर्यवेक्षक विद्यालय नियमित रूप से आते है। प्रत्येक कक्षा में हर चक्र में अवश्य नहीं जाते, कभी–कभी लिख भी देते हैं पाठ पढ़ाया गया। छात्र अध्यापक और छात्र अध्यापिका की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है क्योकि छात्र अध्यापक का मध्यमान 12.12 और छात्र अध्यापिका का 12.27 है। दोनो मध्यमान में अन्तर केवल 0.15 का है और क्रान्तिक अनुपात भी 0.96 है जो 1.96 से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती हैं

तालिका 2

पर्यवेक्षक के पाठ अवलोकन के प्रति छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

	मध्यमान		क्र.अनुपात	कथन
छात्र अध्यापक	11.97	1.58	0.92	असार्थक
छात्र अध्यापिका	11.79	2.18		

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि पाठ सम्बन्धी पर्यवेक्षण ठीक–ठीक होता है परन्तु बहुत उत्तम नहीं होता। पर्यवेक्षक द्वारा पाठ पूरा नहीं देखा जाता। केवल एक चरण या एक पद, एक भाग देखकर चले जाते है। छात्र अध्यापक और छात्र अध्यापिका की अभिवृत्ति में अन्तर नहीं है क्योकि मध्यमान छात्र अध्यापक का 11.97 और छात्र अध्यापिका का 11.79 है। दोनो मध्यमान में अन्तर 0.18 का है और क्रान्तिक अनुपात भी 0.92 है जो 0.05 के मान 1.96 से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका 3

पर्यवेक्षक की योग्यता के प्रति छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

	मध्यमान		क्र.अनुपात	कथन
छात्र अध्यापक	13.97	1.40	0.94	असार्थक
छात्रअध्यापिका	13.84	1.38		

तालिका से ज्ञात होता है कि पर्यवेक्षक योग्य है वे अपने विषय को पढ़ाने की विधि का ज्ञान रखते है। दोनो प्रकार की संस्थाओं के पर्यवेक्षक योग्य पाये गये है। छात्र अध्यापक और छात्र अध्यापिका के विचारों में अन्तर नहीं पाया गया है क्योकि छात्र अध्यापक का मध्यमान 13. 97 और छात्र अध्यापिका का 13.84 है। दोनो में अन्तर 0. 13 का है और क्रान्तिक अनुपात भी 0.94 है जो 0.05 के मान 1.96 से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

तालिका 4

पर्यवेक्षक के कक्षा के मौखिक व्यवहार के अवलोकन के प्रति छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

	मध्यमान		क्र.अनुपात	कथन
छात्र अध्यापक	12.02	1.96	2.35	सार्थक
छात्रअध्यापिका	12.45	1.69		0.1 स्तर पर

मौखिक व्यवहार के अन्तर्गत छात्र अध्यापक के कक्षा में बोलने, खड़े होने, प्रश्न पूछने आदि से सम्बन्धित प्रश्न है। उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि पर्यवेक्षक व्यवहार पर काफी ध्यान देते हैं। छात्र अध्यापिकाओं के पर्यवेक्षक इस बात पर अधिक ध्यान देती है जैसा कि मध्यमान से ज्ञात होता हैं। छात्र अध्यापक का मध्यमान 12.02 है और छात्राध्यापिकाओं का 12.45 मध्यमान में अन्तर 0.43 का है और क्रान्तिक अनुपात भी 2.35 है जो 0.05 के मान 1.96 से अधिक है। अतः दोनो प्रकार की संस्थाओं में अन्तर को स्वीकार करते हुये शून्य परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

तालिका 5

पर्यवेक्षण की उपयोगिता के प्रति छात्राध्यापक एवं छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

	मध्यमान		क्र.अनुपात	कथन
छात्र अध्यापक	14.24	1.71	0.47	असार्थक
छात्र अध्यापिका	14.32	1.68		

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता है कि छात्र अध्यापक व छात्र अध्यापिका दोनो ही पर्यवेक्षण को उपयोगी मानते हैं। उनके अनुसार पर्यवेक्षण से उनके व्यक्तित्व, अध्यापन शैली में सुधार आता है। उनकी त्रुटियां दूर होती है और वे एक सफल शिक्षक बन सकते हैं। दोनो मध्यमान उच्च है और दोनो में अन्तर केवल 0.08 का है और क्रान्तिक अनुपात भी 0.47 है जो 1.96 से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है।

निष्कर्ष

1. पर्यवेक्षक नियमित समय पर नियमित रूप से प्रशिक्षण केन्द्र आते हैं। छात्र अध्यापकों एवं छात्र अध्यापिकाओं

दोनो का ही मध्यमान सामान्य से अधिक है और समान है।

2. पाठ सम्बन्धी पर्यवेक्षण भी उचित होता है। छात्र अध्यापक व छात्र अध्यापिका दोनो की ही अभिवृत्ति सामान्य से अधिक है और अभिवृत्ति में अन्तर भी नहीं है।
3. दोनो ही प्रकार की संस्थाओं के पर्यवेक्षक योग्य होते है उनकी शैक्षिक योग्यता मानकों के अनुसार होती है और अपना कार्य जानते है। ऐसा छात्र अध्यापकों और छात्र अध्यापिकाओं का विचार है। दोनो मध्यमान उच्च है और समान है।
4. पर्यवेक्षक छात्र अध्यापकों के कक्षा में प्रत्येक व्यवहार पर ध्यान देते हैं जैसे बोलने, खड़े होने, प्रश्न पूछने आदि के तरीके। छात्र अध्यापकों व छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति उच्च है परन्तु छात्राध्यापिकाओं की अभिवृत्ति अधिक उच्च है। और दोनो की अभिवृत्ति में अन्तर है।
5. पर्यवेक्षण की उपयोगिता के प्रति भी छात्राध्यापिकाओं एवं छात्र अध्यापकों की अभिवृत्ति बहुत उच्च है और समान है। दोनो ही मानते हैं कि पर्यवेक्षण से अध्यापन में सुधार आता है और छात्र अध्यापक कुछ सीखते है व उनकी कुशलता में सुधार आता है।

शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान समय में राष्ट्र को ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो परिवर्तनशील समाज का प्रतिनिधि हो और जो छात्रों के मूल अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक होकर एक शिक्षित समाज का निर्माण कर सकें। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक निर्माण के लिये उनका प्रशिक्षण अनिवार्य है और प्रशिक्षण की कुछ निश्चित विधियां हैं जिससे भावी अध्यापको में वांछित अध्यापन – व्यवहार के आदर्श विकसित किये जा सकते है। इसके अन्तर्गत यह भी कल्पना की जाती है कि यदि एक बार प्रशिक्षण के मध्य अध्यापक शिक्षण–व्यवहार के आदर्शो को अर्जित कर लेता है तो उसके व्यवहार के ये आदर्श हमेशा स्थिर रहते है अध्यापक शिक्षा एक कार्यक्रम ही नहीं बल्कि एक ऐसा मिशन का आयोजन है जिसके माध्यम से राष्ट्रीय संदर्भ में आधुनिक एवं परिवर्तित अध्यापकीय भूमिका के निर्वहन के लिये दक्षता तथा कुशलता प्राप्ति हेतु व्यक्तियों को शिक्षित किया जा सके।

क्योंकि शिक्षा का उद्देश्य ऐसे मूल्यों का निर्माण करना है जो व्यक्तिगत स्वतंत्र, तर्कपूर्ण तथा संतुलित हो। अध्यापक बनना एक व्यवसाय न होकर समर्पण, आदर्श व मानवीय मूल्यों से ओत प्रोत एक जनसेवा है। आज के बदलते हुये परिवेश में शिक्षकों को प्रशिक्षण के माध्यम से सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान कराया जा सकता है जिससे उनके शिक्षण से सम्बन्धित आत्मविश्वास, प्रायोगिक कुशलता, वाकचातुर्य, विभिन्न शैक्षिक परिस्थितियों में समायोजन जैसे गुणों को विकसित किया जाता है। वर्तमान समय में शिक्षक–शिक्षा के स्तर के उन्नयन के लिये N.C.E.R.T., U.G.C. आदि राष्ट्रीय स्तर की संस्थायें कार्यरत हैं जिनमें N.C.T.E. माध्यमिक स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिये कार्यरत है। इसकी चार क्षेत्रीय समितियां हैं–जयपुर, बंगलौर, भुवनेश्वर और पश्चिमी भोपाल। इनके माध्यम से यह परिषद् कार्य कर रही है।

सुझाव

1. सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम को कम करके व्यवहारिक विषयों को महत्व देना चाहिए।
2. शिक्षण अभ्यास में वर्तमान नयी विधियों का प्रयोग जैस–प्रोजेक्ट, एसाइनमेन्ट, लघु शोध विधि का प्रयोग होना चाहिये।
3. शिक्षक प्रशिक्षण के लिये रिफ्रेशर कोर्स आयोजित किये जायें और उनमें नयी तकनीकी तथा नवाचार को लागू किया जाये।
4. अध्यापन अभ्यास के पर्यवेक्षक का व्यक्तित्व अनुकरणीय हो।
5. शिक्षण अभ्यास के लिये विद्यालय उपलब्ध तो हो जाते है। लेकिन पर्याप्त समय के लिये नहीं मिल पाते और प्रशिक्षार्थियों से उस विद्यालय के बच्चे पढ़ना भी नहीं चाहते इस सम्बन्ध में N.C.T.E. को कोई ठोस रूपरेखा बनानी चाहिये।
6. अध्यापन–अभ्यास के पर्यवेक्षण की गुणवत्ता बनाये रखने के लिये समय–समय पर पाठ्यक्रम में से अनावश्यक तथ्यों को हटाकर आवश्यक तथ्यों को शामिल करना चाहिये जिससे भावी शिक्षकों को नवीन तथ्यों का ज्ञान होगा।

भावी शोध हेतु सुझाव

1. शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शैक्षिक वातावरण का मूल्यांकन
2. बी.एड. में प्रशिक्षण का आलोचनात्मक अध्ययन
3. छात्र अध्यापन के क्षेत्र में नवीनताओं एवं प्रयोगो के अभाव के कारणों की जानकारी हेतु अध्ययन।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. दैनिक जागरण समाचार पत्र(2007)22 अक्टूबर, कानपुर।
2. मसूद, ए–बदरी, मोहम्मद अब्दुल्ला, यो0के0 कमाली (2006)आइडेन्टीफाईंग पोटेन्शियल वॉयसिंग वेरियेवेल्स इन स्टूडेन्ट इवेल्यूएशन ऑफ टीचिंग इन ए न्यूली एक्सीडेटेड बिजनेस प्रोग्राम इन यू0 ए0 ई0
3. केनेथ (2005)''दि सुपीरियर कालेज टीचर फ्राम दि स्टूडेन्ट्स व्यू''
4. हिन्दुस्तान टाइम्स (2004) अक्टूबर 5 लखनऊ।
5. सिंह आर0पी0 (2003)''टुवर्ड ए न्यू लुक एट टीचर एजूकेशन इन इण्डिया'' इन जे0बी0जी0, तिलक एजूकेशन सोसाइटी एण्ड डेवलेपमेन्ट नेशनल एण्ड इण्टरनेशनल पर्सपेक्टिव, ए0पी0एच0 पब्लिसिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली।
6. सी0एस0जे0एम0वि0वि0, कानपुर (2003) शिक्षा संकाय बी0एड0,एम0एड0 सिलेबस।
7. मुखोपाध्याय एम–(2002)''क्वालिटी एसोरेन्स इन टीचर एजूकेशन'' पर्सपेक्टिव इन एजूकेशन वोल्यूम 18, नं0–2 पी0पी0–79–93
8. लेसिली सूसन कूक (2002)''प्राब्लम इन डेवलपिंग ए कान्सट्रक्टिव एप्रोच टू पेमिला जी0 फ्राई ब्रोनो टीचिंग''

9. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (2000–2001)एनुअल रिपोर्ट : नई दिल्ली।
10. कुमार पी0 (2001) इन इकोनामिक एनालिसिस ऑफ सेकेण्डरी स्कूल टीचिंग कैरियर : ए स्टडी ऑफ सम ट्रेन्ड ग्रेजुएट टीचर्स, इन दिल्ली।
11. एम0 एच0 आर0 डी0 (2000–2001) एनुअल रिपोर्ट, मिनिस्टरी ऑफ ह्यूमन रिसोर्स डेवलेपमेन्ट गर्वनमेन्ट ऑफ इण्डिया।
12. एन0सी0टी0ई0 (1998)''केरीकुलम फ्रेमवर्क फार क्वालिटी टीचर एजूकेशन'' नई दिल्ली।
13. बाजपेयी साधना,(2010) छत्रपति शाहू जी महाराज विशविद्यालय कानपुर से समृद्ध महाविद्यालयों के बी0 एड0 विभाग में होने वाले अध्यापन अभ्यास के पर्यवेक्षण का अध्ययन। शोधग्रन्थ, पी0एच0डी0।
14. प्रियंका (2013), शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण मनोवृत्ति एवं कार्य का तुलनात्मक अध्ययन। एम0एड0 लधु शोध।
15. पटेल पूजा (2014),शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों में प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षणाभ्यास से सम्बन्धित समस्याओं का अध्ययन। एम0एड0 लधु शोध।